نومبر ۲۰۰۹ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰہُ تبَارَکَ وَتعَالیٰ قَدْ جَاءَ کُمْ مِنَ اللّٰہِ نُوْرٌ وَکِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

روضۂ مسلم بن عقیلؑ



موسسۂ نور ہدایت، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ۔۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk, Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

November 2009

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ



روضۂ پسران حضرت مسلمؑ لکھنؤ



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

वर्ष-6

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक 5

नवम्बर - 2009

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल

''लखनऊ''

संरक्षक

मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

वार्षिक - 200 रु

मिलने का पता

क़ीमत - 20 रु

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड

चौक लखनऊ - 3 (उ.प्र.) भारत। फोन न० 0522-2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

मजलिसे इदारत

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

WEBSITE:
www.noorehidayat.com
www.al-ijtihaad.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

ज़रे सालाना

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

नवम्बर–2009ई०

ज़ीक़ादतुल हराम - ज़िलहिज्जतुल हराम 1430हि०

रसूले ख़ुदा (स0) ने फ़रमाया:

❁ अपनी ग़लती के छोटा होने को न देखो बल्कि ये देखो कि तुम ने किस की नाफ़रमानी की है।

❁ बिना अमल के दुआ करने वाला वैसा ही है जैसा कमान के बग़ैर तीर चलाने वाला।

❁ किसी शख़्स के झूठा होने के लिए इतना ही काफ़ी है कि जो कुछ भी सुने उसे दूसरों से बयान कर दे।

आज कल की सोच में : क्या इस्लाम ठीक उतरता है?

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
अनुवादकः मु० र० आबिद

इस बारे में रौशनी डालने के लिए पहले यह समझना ज़रूरी है कि आज-कल की सोच में क्या-क्या ख़ास है? इसके बाद यह देखा जा सकता है कि इस्लाम और उसकी शिक्षाएँ उसके साथ कितनी ठीक बैठती हैं।

यह याद रखना चाहिए कि हमारी बात में 'आज की सोच' पर फ़ोकस किया गया है, आज के काम पर नहीं क्योंकि बहुत मुमकिन है कि किसी एक या किसी गुट का काम ख़ुद उसकी सोच से मेल न खाता हो। ऐसे में वह काम कोई वज़न नहीं रखता इसलिए कि वह अक्सर बाहरी दबाव का या अन्दर के मन की चाह से होता है मगर सोच, दिमाग़ के फ़ैसले या ज़मीर (अन्तःकरण/Conscience) की माँग होती है जो अक्सर बेलाग होती है। इसलिए वह भरोसे वाला होता है। बल्कि उसी के काम के ख़िलाफ़ सनद या Proof बनता है जैसे एक चोर चोरी को अच्छी बात नहीं समझता है। उसी तरह झूठा झूठ को, वैसे ही धोखेबाज़ धोखेबाज़ी को। नहीं तो चोर, झूठा या धोखेबाज़ कहे जाने से बुरा न माने। अब यहाँ चोरी या झूठ या धोखेबाज़ी वह तो उसका काम है और यह चोर झूठे या धोखेबाज़ को बुरा समझना उसकी बेलाग सोच है जिसे हम ज़मीर का फ़ैसला कह सकते हैं। एक मानी हुई हैसियत वाले की ज़बान में यह उसके अन्दर की आवाज़ ख़ुद वह अदालत है जिसके कठहरे में वह मुजरिम की सूरत में खड़ा होता है।

इस से समझ लीजिए कि हमें दुनिया के 'आज के काम' से इस समय बहस नहीं है बल्कि 'आज-कल की सोच' से बहस है और उसके लेहाज़ से इस्लाम के उचित होने, ठीक उतरने को देखना है।

इसके लिए पहले हमें 'आज कल की सोच' की ख़ास-ख़ास बातों को देखना होगा। फिर इसके सिलसिले में इस्लाम के बुनियादी उसूल सिद्धान्त और शिक्षाओं पर मुख़्तसर तरह से नज़र डाली जायेगी क्योंकि विस्तार के लिए ये मौक़ा और वक़्त ठीक नहीं है।

आज कल की सोच की सबसे बड़ी ख़ास बात यह है कि दुनिया पहले वालों की लकीर के फ़क़ीर होने से आज़ाद हो रही है। वह पुरानी रीतियों पर अन्धाधुन्ध चलने पर तैयार नहीं बल्कि आज़ाद नज़र से देखने और आज़ाद दिमाग़ से सोचने पर झुकाव रखती है। हो सकता है काम करने में इस सिलसिले में बीच के रास्ते से अलग पैर न उठें या माडर्न होने की चाह से हदों से बढ़ जाएं या लकीर के फ़क़ीर होने की ग़लत भावना के उलटने (Reaction) में बदलाव की चाहत सिर्फ़ शौक़ बनकर रह जाए जिसमें सही समझ का हाथ न हो। मगर मैं पहले कह चुका हूँ कि हमको काम के सही या ग़लत होने से बहस नहीं बल्कि असल सोच के ढंग से बहस है तो इसमें कोई शक नहीं कि बाप-दादा के रास्ते पर अन्धे चलना बहुत हद तक सोच समझ के रास्ते में रुकावट हुई है। सामने की बात है कि आदमी की ऊँचाई बड़ाई समझ और ज्ञान से जुड़ी है इसलिए ऐसे अन्धे चलने की भावना और दिमाग़ी ग़ुलामी आदमी की ऊँचाई के ख़िलाफ़ है।

अब इस लेहाज़ से हम देखते हैं तो इस्लाम वह

अकेला मज़हब नज़र आता है जिसने आँख और अक़ल के दरवाज़ों को खोला है, सोच समझ का न्यौता दिया है, आँख बन्द कर बड़ों के ढर्रे पर चले जाने की कड़े से कड़े शब्दों में धिक्कार की है।

वह कभी मुख़्तसर बात करके आदमी की ऊँचाई-बड़ाई को बार-बार कोड़ा मारता है कि "अ'-फ़ला या'क़िलून" (क्या ये समझ से काम न लेंगे), "अ'फ़ला य-त-फ़क्करून" (क्या ये सोच विचार न करेंगे) "अ'फ़ला य-त-ज़क्करून" (क्या ये सबक़ न लेंगे) और कभी-कभी कड़े लहजे में यूँ फिटकार लगाता हैः 'उनके पास दिल दिमाग़ हैं जिनसे वे सोचते नहीं, उनके पास आँखें हैं जिनसे वे देखते नहीं, उनके पास कान हैं जिनसे वे सुनते नहीं ये चौपायों जैसे हैं बल्कि उनसे भी गिरे।"

यहाँ क़ुरआन में 'अज़ल' (ज़्यादा गिरे) इसलिए कहा गया है कि उन चौपायों के पास सोचने समझने की ताक़त है ही नहीं तो वे अपनी इस कमी पर फिटकार के क़ाबिल नहीं हैं और ये अभागे आदमी ये सब ताक़तें रखते हुए उन से काम नहीं लेते इसलिए ये उलाहने के साथ फिटकार के क़ाबिल हैं।

फिर इस आज़ाद सोच-समझ के ख़िलाफ़ जो जज़्बा होता है यानी वही पहले वालों की लकीर पर अन्धे चलन उसकी कड़े शब्दों में धिक्कार की। इस तरह कि उनकी बात दोहराते हुए ये तर्क दलील लायी गयी। हमने अपने बाप-दादाओं को एक रास्ते पर चलते देखा है और हम उसी रास्ते पर चले जाएंगे फिर इस दलील के नीचपन पर यह कह के रौशनी डाली कि "क्या चाहे उनके बाप-दादाओं ने समझ से काम न लिया हो और न सही रास्ता अपनाया हो" मतलब ये है कि आदमी की ऊँचाई-बड़ाई की माँग ये है कि वह ठीक, सही और समझी हुई है या नहीं, जो बात ठीक हो, सूझबूझ की हो उसे अपनाये और जो इस रास्ते पर न हों वह चाहे अपने बाप-दादा हों उन्हें समझे कि वे ग़लत रास्ते पर थे और हमें उस रास्ते पर नहीं चलना चाहिए।

ज़माने का झुकाव भी यह है इसलिए इस्लाम की बात बिल्कुल आजकल की सोच से मेल खाती है।

दूसरी ख़ास बात आजकल की सोच में नेचर की पढ़ने समझने का चाव है जो साइंस की तरक़्क़ियों का असल सोता है।

इसके लेहाज़ से जब हम देखते हैं तो क़ुरआन ने अपने मूल-सिद्धान्तों, उसूल यानी ख़ुदा के पहचानने के लिए बार-बार दुनिया और नेचर को समझने पर ज़ोर दिया है। कहा गया हैः "क्या उन्होंने आसमान धरती के संसार और जो जो चीज़ें अल्लाह ने पैदा की हैं उन पर ध्यान नहीं दिया"

वह छोटे बच्चों और आम जनता के दिमाग़ के इस ख़ास गुण को देखते हुए कि वह खुले फ़ार्मूलों, उसूलों का असर नहीं लेता जो छोटी-मोटी मिसालों पर ध्यान दिलाने से असर लेता है। इस बारे में खुले विस्तार से काम लेते हुए इस तरह बेख़बर दिमाग़ को मानो झिंजोड़-झिंजोड़ कर जगाया है।

निश्चय आसमान-ज़मीन का पैदा करना और रात दिन का आना जाना और जहाज़ों में जो समन्दर में लोगों के फ़ायदे की चीज़ें लिए हुए चालू हैं और जो अल्लाह आसमान से पानी बरसाता है, तो उस से धरती को उसके मरने के बाद जिला देना और जो उसने धरती में हर तरह के चलने फिरने वाले जानवर फैलाए हैं और हवाओं के चलने और उस बादल में जो आसमान और ज़मीन के किसी के क़ाबू नियन्त्रण में बन्दी रहता है, निशानियाँ हैं, उनके लिए जो समझ से काम लें।"

बेशक क़ुरआन का फ़ोकस संसार की Study से बस इतना जुड़ा है कि उसे वह इस रास्ते उनके पैदा करने वाले सिरजनहार ख़ुदा की ओर मन को ले जाना चाहता है। मगर दुनिया के बड़े पैमाने पर इस स्टडी में जुट जाना जो इस ज़माने की ख़ास बात है, उसे उस मक़सद से जो क़ुरआन का फ़ोकस है, बेशक पास करने का साधन है। इसीलिए जानकार लोग महसूस करते हैं कि एक ज़माना था जब साइंटिस्ट लोग ख़ुदा के होने को नहीं मानते थे, नास्तिक होते थे मगर अब साइंस की तरक़्क़ी के साथ उनमें ख़ुदा के होने का विश्वास बढ़ता जाता है। ऐसे में ये समझने के काफ़ी कारण हैं कि जितनी साइंस तरक़्क़ी करती जाएगी उतनी उस बात के पास आएगी जिसके लिए क़ुरआन ने नेचर की स्टडी को

कहा है।

तीसरी ख़ास बात आजकल की सोच की समाजी और नागरिक पहलुओं में बेचैनी और अलग-अलग कल्चरों के तजुरबों में लगना है। सरमायादारी/पूँजीवाद (Capitalism) के बुरे नतीजों से घबराकर कम्युनिज़्म की ओर झुकाव, अब कम्युनिज़्म के भी बे सुहावने नतीजों और असर का आँखों के सामने आ जाना। यह हद के पीछे रहना या हद से बढ़ जाने के बीच आदमी की दौड़, उन तजुरबों के फेल होने के साथ अपने आप उस बीच के रास्ते के क़रीब लाने का कारण है जिसे इस्लाम सामने लाता है। जहाँ आदमी की अकेली जतन का मोल भी ख़त्म नहीं होता और आदमी धन का पुजारी भी नहीं बनता जहाँ पैसा कमाने की सराहना है मगर पैसा जमा करना बुरा है, जहाँ ग़रीब की मदद करने के साथ एहसान धरना की सोच जुर्म और कर्तव्य (Duty) निबाहने के साथ ख़ुदा की मर्ज़ी चाहने की नियत ज़रूरी शर्त है।

यह इस्लाम के वित्तीय (Economic) सिस्टम की ख़ास बात है जिसका फैलाव थोड़े समय में नहीं हो सकता।

चौथी ख़ास बात आजकल आदमी जाति के लोगों के बीच भेदभाव दूर करने की ओर झुकाव और बराबरी व भाईचारा पैदा करने की चाहत है। इस बराबरी और भाईचारे का पूरा सबक़ इस्लाम ने दिया है। इसलिए संसार की आज की सोच का झुकाव उसे चाहे अनचाहे तरह सही इस्लामी सिस्टम के क़रीब ला रही है।



मोमिन कौन होता है?

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची

मोमिन का लफ़्ज़ हम बराबर सुनते और बोलते रहते हैं लेकिन साथ ही हमें इस पर ग़ौर भी करना चाहिए कि मोमिन किसको कहते हैं। क्या मोमिन बनने के लिए सिर्फ़ ज़बान से ख़ुदा और रसूल और इमाम, क़यामत और दूसरी ज़रूरी बातों का इक़रार कर लेना काफ़ी है या इस ज़बानी इक़रार के साथ कोई और शर्त भी है तो हम ये देखते हैं कि सिर्फ़ ज़बानी इक़रार कर लेने से आदमी मोमिन नहीं बन सकता। इसके लिए ज़रूरी है कि वह ख़ुदा और रसूल[स०] का सिर्फ़ ज़बान से इक़रार न करे बल्कि सच्चे दिल से उस पर अक़ीदा रखे और ये बात तो तक़रीबन हर शख़्स जानता ही है कि जब कोई दिल से किसी चीज़ को मानता है और उस पर अक़ीदा रखता है तो उसकी पूरी ज़िन्दगी और उसके कहने और करने पर उसका असर पड़ता है इसलिए मोमिन सिर्फ़ उसी शख़्स को कहा जा सकता है जो सच्चे दिल से ख़ुदा और रसूल[स०] की पैरवी करता हो और जो-जो बातें पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने बतायी हैं उनको मानता हो और उसी अक़ीदे के मुताबिक़ उस पर अमल भी हो।

ऐसा न हो कि ज़बान से तो वह ख़ुदा का इक़रार करे, रसूल[स०] का इक़रार करे मगर उसका अमल इस इक़रार के ख़िलाफ़ हो क़ुरआने करीम को ख़ुदा की किताब कहता हो मगर उसकी ज़िन्दगी क़ुरआनी हिदायतों के बिल्कुल ख़िलाफ़ हो। जैसे झूठ बोलता हो, वादा ख़िलाफ़ी करता हो, लोगों को धोका देता हो उनके साथ बुरे अख़लाक़ से पेश आता हो, बड़ों का अदब न करता हो, नमाज़ न पढ़ता हो, रोज़ा न रखता हो, माँ-बाप की इज़्ज़त न करता हो, ग़रीबों को ज़लील समझता हो और दूसरे लोगों को तकलीफ़ पहुँचाता हो, अमानत में हेरफेर करता हो, चारो तरफ़ झगड़ा और फ़साद फैलाता फ़िरता हो, दूसरों का नुक़सान करके अपना भला चाहता हो, पीठ पीछे लोगों की बुराईयाँ यानी ग़ीबत करता हो, दूसरों की अच्छाई न देख सकता हो, दूसरे लोगों से दिल में दुश्मनी और हसद रखता हो, ग़रज़ वह सब करता हो जिसे अल्लाह ने अपने रसूल[स०] और अपनी पाक किताब यानी क़ुरआन करीम के ज़रिये अपने मोमिन बन्दों को बता दिया है फिर ऐसा आदमी किस तरह मोमिन कहे जाने के लायक़ हो सकता है? सरकारे दो आलम[स०] ने अपनी बहुत सी हदीसों में समझा दिया है कि मोमिन कौन हो सकता है?

एक हदीस में आप फ़रमाते हैं "तुम में से कोई भी उस वक़्त तक मोमिन नहीं बन सकता जब तक मेरी मुहब्बत उसको अपने माँ-बाप, अपनी औलाद और सभी लोगों और सभी चीज़ों से ज़्यादा न हो" और ये बात तो हर शख़्स जानता है कि हमें सरकारे दो आलम[स०] से जितनी मुहब्बत होगी उतना ही आपके हुक्म पर अमल करने और आपके रास्ते पर चलने का शौक़ हमारे दिलों में बढ़ेगा।

एक और हदीस में है "मोमिन की निशानी ये है कि उसमें तीन बातें पायी जाएं: एक ये कि उसे अल्लाह और उसका रसूल[स०] सारी दुनिया से ज़्यादा प्यारा हो।

दूसरे ये कि वह जिस से मुहब्बत करे अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिये करे।

और तीसरे ये कि इस्लाम लाने के बाद फिर उसके दिल में कभी इस्लाम की तरफ से शक पैदा न हो और कुफ़्र की तरफ़ लौट जाने को ऐसा ही बुरा समझे जैसे आग के अन्दर गिर जाने को वह कभी पसन्द नहीं करता।

मुख़्तसर ये कि जिस मुसलमान के आमाल अच्छे होंगे और ख़ुदा से डरता होगा और उसकी पैरवी को अपना सबसे बड़ा फ़र्ज़ समझता होगा वही सच्चा मोमिन हो सकता है। सिर्फ़ ज़बान से इक़रार करने वाला हरगिज़ मोमिन नहीं कहा जा सकता।



सोशलिज़्म और इस्लाम

हुज्जतुल इस्लाम वलमुस्लिमीन मौलाना सै० हसन नक़वी साहब

किसी उसूल का मुबल्लिग़ जितना कामिल होगा उतना ही वह उसूल हमागीर और हरदिल अज़ीज़ होगा। ये खुली बात है कि किसी कमेटी या किसी अन्जुमन के लिए कुछ क़ानून एक अन्जान शख़्स बनाए तो वह रद कर दिये जाएंगे और उसी अन्जुमन के लिए कुछ क़ानून कोई बाख़बर सियासतदाँ बनाता है तो वह मन्ज़ूर किये जाते हैं इसकी वजह ये मालूम होती है कि पहले शख़्स के तैयार किये हुए उसूल अगर नुक़सान पहुँचाने वाले न भी हों तो शायद किसी शख़्स के या किसी ख़ास जमाअत के फ़ायदे में महदूद हों या सियासी हैसियत से कमज़ोर हों। लेकिन वह माहिरे फ़न जो क़ानून बनाता है वह (अगर ईमानदारी से बनाए) पूरी अन्जुमन या पूरे मुल्क के लिए फ़ायदेमन्द और हमागीर होते हैं अब इस क़ायदे के बाद देखना है कि इस्लाम बेहतर है या सोशलिज़्म? इस के क़ानून ज़्यादा हमागीर हैं या उसके। अगर ये देखना है तो उनके क़ानून बनाने वालों और उनके मुबल्लिग़ों पर नज़र कीजिये। सोशलिज़्म का बनाने वाला भी माद्दी इन्सान था और उसकी तबलीग़ करने वाला भी माद्दी इन्सान था मुबल्लिग़ और ईजाद करने वाला दोनों किसी ख़ानदान के लोग थे किसी मुल्क के रहने वाले थे, किसी क़ौम से ताल्लुक़ रखते थे इसलिए इन क़ानूनों में भी कभी मुल्क, कभी क़ौमी, कभी ख़ानदानी फ़ायदे का ख़याल रखना लाज़मी बात है इसलिए यह हमागीर नहीं हो सकते। लेकिन इस्लाम का क़ानून बनाने वाला वह था जो न किसी मुल्क का रहने वाला, न उसको किसी ख़ानदान से ताल्लुक़, न किसी क़ौम से सरोकार, न किसी मकान से मुहब्बत, न किसी सरज़मीन से उलफ़त, बल्कि उसके लिए सब बराबर हैं और उसने मुबल्लिग़ भी ऐसे को बनाया जिसके लिए पहले कह दिया था कि ***"वमा अरसलनाका इल्ला रहमतुल लिलआलमीन"*** और कभी इरशाद हुआ ***"तबारकल्लज़ी नज़्ज़लल फ़ुरक़ान अला अब्दिही लियकूना लिलआलमीना नज़ीरा"*** मालूम होता है कि बस सिर्फ़ इस्लामी क़ानून ही हमागीर हो सकते हैं।

इस्लाम ने भी दुनिया में आकर इन्क़ेलाब पैदा किया और सोशलिज़्म ने भी, इस्लाम भी बराबरी को क़ायम रखने वाला है और सोशलिज़्म भी, मगर दोनों में फ़र्क़ है। सोशलिज़्म ने माद्दी इन्क़ेलाब पैदा करके चाहा कि ज़हनियत बदल जाए और इस्लाम ने ज़हनी इन्क़ेलाब पैदा किया ताकि माद्दी इन्क़ेलाब अपने आप आ जाए और यही सबब है कि सोशलिज़्म से सरमायेदार अलग हो गये, मगर इस्लाम में ग़रीब और अमीर सब दाख़िल हैं। सोशलिज़्म से अगर सरमायेदारी ख़त्म की तो सरमायेदार अलग हो गये। मगर इस्लाम ने चूँकि ज़हन बदल दिया था इसलिए सरमायेदार सरमायेदारी ख़त्म होने के बाद भी खुश रहे। इस्लाम ने कभी खुम्स के नाम से कभी ज़कात के नाम से तो कभी सदक़ात के नाम से सरमायेदारी ख़त्म कर दी। सोशलिज़्म ने सरमायेदारी ख़त्म की तो इस तरह कि सरमायेदारों से छीन कर यानी सोशलिज़्म ने इन्सान को ग़रीब बनाकर सरमायेदारी ख़त्म की। और इस्लाम ने सबको अमीर बनाकर बराबरी क़ायम की। इस्लाम की ये कोशिश है कि इस खुम्स व ज़कात और सदक़ात ही की वजह से ग़रीब खुद सरमायेदार हो जाएं ताकि बराबरी क़ायम हो जाए और नाजायज़ सरमायेदारी ख़त्म हो जाए।

रसूल अकरम[स०] ने आकर सबसे पहले माद्दी

बड़कपन को मिटाना शुरु कर दिया कि इन्सान इन्सान सब बराबर हैं नसली बुलन्दी, बुलन्दी की वजह नहीं बादशाहत फ़ख़्र की वजह नहीं, हुकूमत व दौलत फ़ख़्र करने वाली नहीं, इज़्ज़त व मालदारी फ़ज़ीलत की वजह नहीं। रसूल[स०] ने इन फ़ख़्र करने वालों को समझा दिया कि जिनको तुम नीचा समझ रहे हो, वह नीचा नहीं है।

पस्ती की तरफ़ कभी हिक़ारत से न देख
पस्ती से बुलन्दी के निशाँ मिलते हैं

बल्कि जो तुम में अमली मैदान में आगे होगा बस वही बुलन्द है। और आप देख लें कि माद्दी बड़कपन ही की वजह से क़ौमें बर्बाद हुईं मुल्क तबाह हुए हुकूमतें हारीं और बादशाहतें ख़त्म हुईं पुरानी तहज़ीब को ज़िन्दा करने की चाहत ने रूम की सलतनत को बर्बाद किया, साम्राजी और पुराने उसूलों की पूजा की ज़िद ने बिर्टेन को परेशान किया, शहंशाहियत और दक़ियानूसी ने जापान को कुँए में झोंका, नसली फ़ख़्र की धुन ने जर्मनी को तबाह किया, ख़ुद परस्ती लालच ने अरबों को दरिन्दा बना दिया इन सब में एक को और कभी सबको इख़्तियार करने की नामुबारक कोशिश ने हिन्दुस्तान को जाहिल और ग़ुलाम बना रखा था।

जब तक इन्सान एक होकर किसी ऐसे क़ानून पर अमल न करेगा जो उसको इन्सानियत के लिए पैदा करने वाले की मुहब्बत में डुबोकर पूरी मख़लूक़ को प्यार करने पर मजबूर न कर दे इस वक़्त तक हमेशा उसके सामने जेहालत, ग़ुलामी, तबाही, बर्बादी और जंग के दरवाज़े खुले रहेंगे।

और ऐसा क़ानून रसूल[स०] ने पेश कर दिया, जिसने माद्दी इम्तियाज़ों को मिटा दिया, नसली फ़ख़्र ख़त्म कर दिये, रईस और ग़रीब को भाई बना दिया, मुफ़लिस को बादशाह का क़रीबी बना दिया, ग़ुलाम को मालिक का एहतेराम क़ायम रखते हुए साथी बना दिया, हाकिम और महकूम के फ़र्क़ को ख़त्म कर दिया बल्कि यूँ अर्ज़ करूँ

एक ही सफ़ में खड़े हो गये महमूदो अयाज़
न कोई बन्दा रहा और न कोई बन्दा नवाज़

अरब की सी जाहिल क़ौम को रसूल[स०] ने अपनी अच्छी सीरत, अच्छे अख़लाक़ और बुलन्द किरदार से बुलन्द करना शुरु किया वह क़ौम को जिनके यहाँ लूट लेना फ़ख़्र था, क़त्ल कर देना तारीफ़ के क़ाबिल था, ज़ुल्म करना तारीफ़ के लायक़ था, वह अरब जिनके यहाँ जुआ खेलना, शराब पीना, इन्सानों के ख़ून से हाथ रंगना एक मामूली बात थी ख़ुद ज़ुल्म सहे तकलीफ़ें उठायीं मगर रसूल[स०] ने अपने बुलन्द किरदार से जाहिल अरबों के गन्दे माहौल को बदल दिया और साबित कर दिया कि

माहौल से इन्सान नहीं बनता है
इन्सान से माहौल बना करता है

हैवानियत मिटायी, इन्सानियत की ख़ुशबू पैदा की, ज़ुल्म की हुकूमत ख़त्म की, इन्साफ़ की हुकूमत क़ायम की, ख़ुदसरी के लशकरों को हराया, मेहरबानी के ढोल बजाए, नफ़रत की फ़ौजें झुक गयीं, मुहब्बत के परचम लहराए, हैवानियत के तख़्ते उलट दिये, इन्सानियत की बिसात बिछायी, इन्सानों में इन्सानियत आ गयी।

एक अकेला मुबल्लिग़ और एक कमसिन बच्चा, और एक कमज़ोर औरत मददगार और पूरा अरब ख़ून का प्यासा, अपने पराये हो गये अमीन और सादिक़ कहने वाले दुश्मन हो गये।

दौलत और हुकूमत की लालच, ख़ूबसूरती की चाहत और क़ूवतों के ज़ोर लगाये जा रहे हैं मगर रसूल[स०] अपने काम में लगे हुए हैं इन्सानों में हक़ परस्ती की सच्ची और कभी न ख़त्म होने वाली स्प्रिट पैदा कर रहे हैं और फिर कामयाबी होते-होते रसूल[स०] ने हक़ परस्त और बेयारो मददगार क़ौमों को बता दिया कि

ताक़तों से न डर के रोक क़दम
जब्र में इख़्तियार होता है

अगर तुम में हक़ परस्ती है और तुम्हारे उसूल फितरत के बनाये हुए उसूल हैं, तुम भी मेरी ही तरह बिना तलवार उठाये हुए, बिना जंग किये हुए, जबरूतियत के तख़्ते उलट सकते हो, तशद्दुद के ताज छीन सकते हो, बहीमियत के लशकरों को शिकस्त दे सकते हो। मेरी पैरवी करके इन्सान को शाहकार इन्सानियत और ताजे बशरियत पहना सकते हो।



ग़दीरे ख़ुम

प्रोफ़ेसर सै० मुज़फ़्फ़र हसन साहब जौनपुरी

सूरए माएदा की आयत नम्बर 3 में निस्फ़ के बाद है: ''आज मैंने तुम्हारे लिए दीन को पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए 'इस्लाम' को दीन के तौर पर पसन्द कर लिया।

हज्जतुल विदाअ़ की वापसी पर जब पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने ख़ुदा के इरशाद के मुताबिक़ रिसालत का हक़ बहुत ही होशमन्दी और एहतियात के साथ उस वक़्त के तबलीग़ी तरीक़ों को काम में लाने के बाद अली[अ०] की विलायत का एलान करके अदा कर दिया तो सनद के तौर पर ये आयत नाज़िल हुई, यानी दीन अज़मत, सरबलन्दी और अहकाम के पूरा होने और क़वाएद के लेहाज़ से पूरा हो गया। इसके नतीजे में नेमतें पूरी हुईं और इस्लाम पूरे तौर पर ज़िन्दगी के क़ानूनों की सूरत में एक दीन बन गया। जैसे अब कोई नया हुक्म नाज़िल न होगा, बल्कि कुरआनी उसूल की रौशनी में ततबीक़ के गोशे बेनक़ाब किये जाएंगे। नुबुव्वत और रिसालत पर ख़ातमियत की मुहर लगने के बाद इमामत का दौर शुरु होगा जिसका मन्सबी फ़र्ज़ होगा दीन की हिफ़ाज़त और ये सिलसिला क़यामत से मिल जाएगा इस तरह कि बारहवें इमाम[अ०] ख़ुदा के हुक्म से ग़ैब के पर्दे में रह कर ज़माने के अउ़लम के ज़रिये हिदायत के फ़राएज़ अन्जाम देते रहेंगे। इस आयत पर तफ़सीरे फ़ुरात इब्ने इब्राहीम कूफ़ी में इस तरह रौशनी डाली गयी है।

अल्लाह के रसूल[स०] ने फ़रमाया कि ग़दीरे ख़ुम का दिन मेरी उम्मत की सभी ईदों से अफ़ज़ल है। ये वह दीन है जब अल्लाह तआला ने मुझे अपने भाई अली बिन अबी तालिब[अ०] को मेरी अपनी उम्मत के लिए रहनुमा तय करने का हुक्म दिया ताकि लोग मेरे बाद उनसे हिदायत हासिल करें, और यही वह दिन है जब अल्लाह ने दीन को पूरा किया और इसी दिन मेरी उम्मत के लिए नेमतों को पूरा किया और उनके लिए इस्लाम को दीन के तौर पर पसन्द किया।

''फ़ुरात बिन इब्राहीम कूफ़ी'' के बारे में सैय्यिदुल उलमा मौलाना सै० अली नक़ी साहब मुजतहिद ने अपनी किताब ''मुक़द्दम-ए-तफ़सीरे कुरआन'' मतबूतआ इदार-ए-इल्मिया (पाकिस्तान) लाहौर के पेज 154 पर लिखा है:

''फ़ुरात बिन इब्राहीम कूफ़ी ये भी बिल्कुल उसी ज़माने में थे, शैख़ अली बिन बाबवैह ने इनसे भी अहादीस ली थीं। इनकी तफ़सीर ज़्यादातर उन हदीसों के मज़मून पर मुशतमिल हैं जो अइम्मए मासूमीन के फ़ज़ाएल व मनाक़िब में नाज़िल हुई हैं। अल्लामा मजलिसी ने बिहार में लिखा है कि तफ़सीरे फ़ुरात बिन इब्राहीम के मुताल्लिक़ अगरचे उलमा ने कोई इज़हारे ख़याल नहीं किया है, लेकिन इन अहादीस का उन अख़बार के मुताबिक़ होना जो हमें दूसरे ज़रियों से अइम्मए मासूमीन की तरफ़ से पहुँचे हैं, इसके मुसन्निफ़ के भरोसे के गवाह हैं। इस इबारत को देखते हुए ऊपर दी हुई हदीस की अहमियत बहुत बढ़ जाती है और हुज़ूर का ये इरशाद फ़रमाना कि ''ग़दीरे ख़ुम का दिन मेरी उम्मत की सभी ईदों से अफ़ज़ल है, मोमिन के दिल को न ख़त्म होने वाली तक़वियत बख़शता है''।

हुज़ूरे अकरम[स०] ने अगरचे रिज़ाए इलाही के

लिए अपने वतन यानी मक्के को छोड़ा था और मदीने को आबाद किया था, लेकिन फ़ितरी ज़रूरत की बुनियाद पर वतन की याद सताती रहती थी। क्यों न हो? आख़िर वतन, वतन है और सफ़र, सफ़र है, चुनानचे जब हज फ़र्ज़ किया गया तो हुज़ूर के दिल की कली खिल उठी और आपने इस फ़रीज़े को पूरा करने की तैयारी शुरु कर दी। शौक़ का ये इसरार था कि वक़्त अपना दामन समेट ले ताकि इन्तिज़ार की घड़ियाँ ख़त्म हो जाएं।

हुज़ूर[स०] का हज का इरादा जब ईमान वालों को मालूम हुआ तो वह रसूल की मुहब्बत और हज के फ़र्ज़ को पूरा करने की दोहरी सआदत हासिल करने की ग़रज़ से परवानों की तरह मदीने की तरफ दौड़ पड़े। देखते ही देखते मदीने के चारो तरफ एक लाख से ज़्यादा का मजमा हो गया और हर तरफ़ ख़ेमे ही ख़ेमे नज़र आने लगे।

25वीं ज़ीक़ादा 10हि० को हुज़ूर[स०] पाकीज़ा ख़ुशबूदार माहौल में ज़ोहर की नमाज़ अदा करने के बाद अपने ख़ानदान को लिये मदीने के बाहर आए और जांनिसारों के अज़ीमुश्शान व अज़ीमुल मरतबत क़ाफ़ले को लेकर मक्क-ए-मुअज़्ज़मा की तरफ़ रवाना हुए ऐसा क़ाफ़ला ज़मीनो आसमान ने कभी न देखा था। क़ाफ़ला सालार अम्बिया व रसूलों का सरदार और क़ाफ़ले वाले पाक दिल और पाक बातिन, तादाद में लाख से ज़्यादा और सालार की पैरवी में एक दिल और एक जान ''लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक'' की गूँज मैदानों, घरों, पहाड़ों और जंगलों को तौहीद के नग़मों से भरती हुई।

उस वक़्त हज़रत अली[अ०] यमन में थे, चुनानचे आप भी हज की ग़रज़ से मक्के में आए, अकेले नहीं बल्कि हज करने वालों का एक बहुत बड़ा क़ाफ़ला लेकर। ये दोनों क़ाफ़ले जब एक हुए तो शान व शौकत देखने के क़ाबिल थी।

हुज़ूर ने जो रास्ता इख़्तियार किया और जहाँ-जहाँ ठहरे, तारीख़ ने सबको अपने सीने में महफ़ूज़ कर लिया। यलमलम, शर्फ़ुस्सियालह, अर्क़े अन्तबिया, अररौहा, मुन्सरिफ़, मुतअश्शी, इसाबा, मन्ज़िले अरज, लहिये जमल, सक़िया, अबवा, हजफ़ा, क़दीद, अफ़ान, मुर्ररुज़्ज़ोरान, सरफ़, इन सबको ये इज़्ज़त मिली कि यहाँ के ज़र्रों ने इन क़ाफ़ले वालों के क़दम चूमे जिनका क़ाफ़ला सालार वह था जिसके लिए अल्लाह ने काएनात बनायी। अल्लाह के उन मुक़द्दस बन्दों को रसूल की मुहब्बत में हज का फ़रीज़ा अदा करने की वह सआदत नसीब हुई जो उनके लिए हमेशा फ़ख़्र का सरमाया रही। हुज़ूर[स०] ने सफ़र के बीच कई ख़ुतबे दिये जिन्हें सुन-सुन कर ईमान में ताज़गी और शगुफ़्तगी आयी। इन्हीं ख़ुतबों में एक ख़ुतबा वह भी है जिसमें आपने इरशाद फ़रमाया थाः यानी ''मैं तुम्हारे दरमियान दो क़ीमती चीज़ें छोड़े जाता हूँ, अल्लाह की किताब और अपनी इतरत (यानी) मेरे अहलेबैत[अ०]। जब तक तुम इन दोनों से जुड़े रहोगे, मेरे बाद गुमराह नहीं होगे और ये दोनों एक दूसरे से अलग नहीं होंगे, यहाँ तक कि हौज़े कौसर पर मुझ से आ मिलें।

अल्लाह के आख़री नबी व रसूल[स०] ने साफ़-साफ़ बता दिया कि इस्लाम की ताज़गी और ईमान की पुख़्तगी के लिए ज़रूरी है कि क़ुरआन और अहलेबैत से जुड़े रहो। अगर ऐसा न हो तो ईमान की ख़ैर नहीं। सिर्फ़ क़ुरआन या सिर्फ़ अहलेबैत से ताल्लुक़ काम नहीं देगा और ये तरीक़ा अल्लाह के आख़री रसूल[स०] की मुख़ालेफ़त पर होगा।

हुज़ूर[स०] जब हज के लिए रवाना हुए थे तो मुसलमानों की बड़ी तादाद आप[स०] के साथ थी, और जब हज के अरकान अदा करने के बाद आप लौटे हैं तो लोगों की तादाद में हज़ारों का इज़ाफ़ा हुआ, जैसे अज़मत व जलालत ने अल्लाह की ज़बाने हाल से एतेराफ़ किया।

ये क़ाफ़ला ज़माने की चलत-फिरत को रौंदता हुआ लौट रहा था कि पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़माँ[स०] पर रुक-रुक कर वही नाज़िल हुई।

''ऐ रसूल[स०]! पहुँचा दो वह सब जो तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल हुआ है, और

अगर तुम ने ऐसा न किया तो उसके पैग़ाम को पहुँचाया ही नहीं और अल्लाह तुमको लोगों से बचाए रखेगा। यक़ीनन अल्लाह काफ़िर लोगों को रास्ता न देगा।"

ख़िताब कितना बलीग़ है! रसूल[स०] कह कर मुख़ातब किया जा रहा है। इसके बाद ज़ोर दिया जा रहा है कि जो कुछ तुम पर नाज़िल किया गया है, उसे पहुँचा दो। कोई सराहत नहीं है और सराहत की ज़रूरत भी क्या थी, क्योंकि जिससे ख़िताब किया गया है वह अच्छी तरह जानता है फिर और ज़ोर ये दिया गया कि अगर तुम ने ऐसा नहीं किया तो रिसालत का काम ही अन्जाम नहीं दिया इसके बाद हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी ख़ुदावन्दे आलम ने अपने सर ली और आयत के आख़िर में ये क़ाएदा बयान किया गया कि यक़ीनन अल्लाह काफ़िरों को रास्ता नहीं देता।"

इस तरह की आयतें क़ुरआने हकीम में जगह-जगह हैं कि जहाँ शाने नुज़ूल जाने बिना बात समझ में नहीं आती और शाने नुज़ूल का इल्म सबसे ज़्यादा हुज़ूर[स०] को था। आप आख़री रसूल थे और क़ुरआने हकीम आपकी रिसालत का ऐसा हमेशा रहने वाला मोजिज़ा था जिसे क़यामत तक बाक़ी रहना था, या फिर शाने नुज़ूल से वाक़फ़ियत उनको थी जो आपके अहलेबैत[अ०] थे और आपकी तबलीग़ी सरगर्मियों में दिलो जान से शरीक थे। इनके अलावा शाने नुज़ूल से वह लोग भी वाक़िफ़ थे जो उनके दामन से जुड़े हुए थे। रहे वह लोग जो अहलेबैत से हदीसें लेना नहीं चाहते थे, उनका इल्म इस सिलसिले में एतेबार के क़ाबिल न था, उनकी नियत साफ़ नहीं थी, वरना अहलेबैत[अ०] से दूर न भागते। वह अपना क़िब्ला अलग बनाना चाहते थे, इसी लिए आय-ए-बल्लिग़ की तफ़सीर में मुअ्तबर रिवायत वही है जो भरोसे वाले रास्ते से उम्मते मुस्लिमा तक पहुँची।

अल्लामा सै० मुहम्मद हुसैन तबातबाई ताबा सराह की मशहूर व मारूफ़ तफसीर "अल-मीज़ान फ़ी तफ़सीरिल क़ुरआन" जिल्द-6 पेज-59 का आज़ाद तर्जुमा इख़्तेसार के साथ ख़िदमत में पेश है। "फ़त्हुल क़दीर" में इब्ने मसूद के बयान के मुताबिक़ "या अय्युहर रसूलु बल्लिग़ मा उन्ज़िला इलैइक मिर रब्बिक" के बाद तफ़सीरी फ़िक़रा यूँ है: "इन्ना अलिय्यन मौलल मोमिनीन" यानी "बेशक अली[अ०] मोमिनीन के मौला हैं" आगे बढ़कर साहेबे तफ़सीरे मज़कूर लिखते हैं कि ये चन्द हदीसें "या अय्युहर रसूलु बल्लिग़ मा उन्ज़िला इलैइक मिर रब्बिक" से मुताल्लिक़ अली[अ०] के हक़ में हैं। और हदीसे ग़दीर यानी "जिसका मैं मौला हूँ, उसके अली[अ०] मौला हैं"। हदीसे मुतवातिर है और शिया और अहलेसुन्नत दोनों की तरीक़ों से रिवायत हुई है और ये तरीक़े सौ से भी ज़्यादा हैं। इसकी रिवायत सहाबा केराम के बड़े गिरोह ने की है, जैसे बरा बिन आज़िब, ज़ैद बिन अरक़म, अबू अय्यूब अन्सारी, उमर बिन ख़त्ताब, अली बिन अबी तालिब, सलमान फ़ारसी, अबूज़र ग़फ़्फ़ारी, अम्मार बिन यासिर, बुरैदा, साद बिन वक़ास, अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अबू हुरैरा, जाबिर बिन अब्दुल्लाह, अबू सईद ख़ुदरी, अनस बिन मालिक, इमरान बिन हुसैन, इब्ने अबी औफ़ा, सअ्दाना, ज़ौजा ज़ैद बिन अरक़म। ये फ़ेहरिस्त बताती है कि हज्जतुल विदाअ् की वापसी पर हुज़ूर ने मक़ामे ग़दीर पर अल्लाह के हुक्म को कितने एहतेमाम और इन्तिज़ाम से पूरा किया।

हज के अरकान अदा करने के बाद हुज़ूर[स०] जब ग़दीरे ख़ुम पर पहुँचे तो अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ "तबलीग़े रिसालत" का फ़रीज़ा अन्जाम देने के लिए एक प्रोग्राम तैयार किया। ग़दीरे ख़ुम की जगह ऐसी है कि मक्के की वापसी पर सारे क़ाफ़ले को यहाँ आना पड़ता है, फिर यहाँ ये मिस्र, बसरे, कूफ़े और मदीने जाने के रास्ते अलग-अलग हो जाते हैं। ये मक़ाम हजफ़ा के हुदूद में है।

ये क़ाफ़ला जब मक्के से वापस हुआ था तो हाजियों की बड़ी तादाद आगे-आगे थी। हुज़ूर[स०] और उनके साथ चलने वाले दरमियान में थे और आख़िर में फिर हाजियों की एक बड़ी भीड़ थी। हुज़ूर[स०] ग़दीर ख़ुम पर ठहर गये। जो लोग आगे निकल गये थे, उन्हें तेज़ रफ़्तार क़ासिदों को भेजकर वापस बुलाया और जो लोग पीछे रह गये थे उनका इन्तिज़ार किया। इस जगह पर

बबूल के पाँच बड़े पेड़ थे। आपने फ़रमाया कि इनके नीचे कोई न बैठे। जाँनिसारों ने पैग़म्बर^{स०} के इरशाद पर अमल किया। इन पेड़ों के नीचे की ज़मीन गन्दगी से पाक की गयी, आसपास की ज़मीन को भी झाड़ा गया। इतने में ज़ोहर का वक़्त आ चुका था। फ़िज़ा में अज़ान गूँजी। हुज़ूर^{स०} इन पेड़ों के नीचे तशरीफ़ लाए, ज़ोहर की नमाज़ की इमामत की। एक लाख से ज़्यादा तौहीद के परस्तारों ने आप^{स०} के पीछे नमाज़ पढ़ी। धूप की शिद्दत से बचने के लिये लोगों ने अपनी-अपनी चादर का कुछ हिस्सा सर पर डाल रखा था और कुछ ज़मीन पर बिछा लिया था। हुज़ूर^{स०} को आफ़ताब की गर्मी से बचने के लिए लोगों ने बबूल की शाख़ों पर एक चादर तान दी थी। नमाज़ के बाद आप उसकी तरफ़ बढ़े जहाँ ऊँट के कजावों को तले ऊपर रख के एक अज़ीमुश्शान और मिसाली मिंबर बनाया गया था। ये मिंबर बीच में था और मजमा चारो तरफ़। हुज़ूर^{स०} पैग़म्बराना जाहो जलाल के साथ मिंबर पर जलवाअफ़रोज़ हुए, एक निगाह पूरे मजमे पर डाली और फ़सीह व बलीग़ ख़ुतबे की शुरुआत की। पहले हम्दो सना के मोती बिखेरे, फिर वह्यि की ज़बान से इरशाद फ़रमाया ''लोगो! अनक़रीब मैं ख़ुदा के दरबार में बुलाया जाने वाला हूँ और मैं चला जाऊँगा। मुझ से भी पूछताछ होगी और तुम से भी। बताओ! तुम क्या जवाब दोगे? सबने एक ज़बान होकर कहा- ''हम गवाही देते हैं कि आपने रिसालत का पैग़ाम और हमारी भलाई में कोई कसर नहीं छोड़ी। ख़ुदा आपका भला करे।'' इसके बाद फिर आपने फ़रमाया ''क्या तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं? और ये कि मुहम्मद^{स०} उसके बन्दे और रसूल हैं? और ये कि जन्नत, दोज़ख़ और मौत हक़ हैं? और ये कि क़यामत आकर रहेगी, इसमें कोई शक नहीं? और ये कि ख़ुदावन्दे आलम सबको क़ब्रों से उठायेगा?'' पूरे मजमे ने कहा ''हम इन सबकी शहादत देते हैं'' ये सुनकर आप ने फ़रमाया ''अल्लाह! तू गवाह रहना'' फिर हुज़ूर ने इरशाद फरमाया ''एक बात ग़ौर से सुनो!'' मजमे ने कहा ''इरशाद हो'' आप^{स०} ने फ़रमाया ''मैं हौज़े कौसर पर तुम्हारा इन्तिज़ार करूँगा और तुम लोग हौज़े कौसर पर मुझसे मिलोगे। वहाँ चादी के प्याले सितारों की तादाद के मुताबिक़ होंगे। इसका ख़याल रखना कि मेरे सक़लैन के साथ तुम्हारा सुलूक कैसा है।'' किसी ने पूछा, ''सक़लैन से क्या मुराद है?'' आप^{स०} ने कहा ''सिक़्ले अकबर'', अल्लाह की किताब है जिसका एक सिरा अल्लाह के हाथ में है, दूसरा तुम्हारे पास है। इसको पकड़े रहना, वरना गुमराह हो जाओगे। और ''सिक़्ले असग़र'' मेरी इतरत है। मुझे ख़ुदाए लतीफ़ व ख़बीर ने बताया है कि ये एक दूसरे से जुदा नहीं होंगे, यहाँ तक कि हौज़े कौसर पर मुझ से आ मिलेंगे। तुम उन दोनों से अलग न होना और न उनका हक़ मारना, वरना गुमराह और हलाक हो जाओगे।''

इस अज़ीमुश्शान तमहीद के बाद आप^{स०} ने अली^{अ०} को पास बुलाया, मज़बूती से उनके बाज़ू पकड़े और उन्हें इतना उठाया कि बग़ल की सफ़ेदी दिखायी देने लगी। देखने वालों ने ये मन्ज़र देखा कि अल्लाह के रसूल^{स०}, अली^{अ०} को इस तरह उठाये हुए हैं कि सिर्फ़ अली दिखायी दे रहे हैं और हुज़ूर का जिस्म उनके पीछे है।

उलमाए नफ़सियात का ये कहना है कि याद रखने के लिए देखना बड़ी अहमियत रखता है, इसके साथ अगर सुनने की ताक़त शामिल हो जाए तो याद को और ताक़त मिल जाती है इसके आगे का दर्जा दिल की तलब है जिसके असर की हद तैय नहीं की जा सकती। क़ुरआने हकीम में सुन्ने, देखने और बोलने का बयान है जो इसी मतलब को और बेहतर तरीक़े से पेश करता है। अब ग़दीरे ख़ुम का मन्ज़र ख़याल की आँखों से देखिये। पूरा नज़्ज़ारा नज़रों के सामने है। आँखों को मेराज मिल रही है। हुज़ूर^{स०} की आवाज़ दिल की गहराई में उतर कर कानों में रस घोल रही है। इसी मजमे में वह लोग भी है जिनके दिल की धड़कन में मवद्दत उनके साथ है। इन बातों के सिवा जगह के तय करने में इन्फ़ेरादियत है। मिंबर की शान दूसरे मिंबरों से अलग होती है। ख़िताब का अन्दाज़ रूह का खाना बनता

जा रहा है, पेशकश नयी है। क्या ऐसा इन्तिज़ाम और एहतेमाम किसी और मौक़े पर हुआ? तारीख़ हैरान है। हुज़ूर अकरम[स०] ने रिसालत का हक़ अदा कर दिया और हर तरह की हुज्जत पूरी कर दी। इसके बाद भी कोई शक करे तो इसका इलाज तो लुक़मान के पास भी नहीं।

अली[अ०] को बुलन्द करके अल्लाह का रसूल कहता हैः ''ऐ लोगो! तुम लोगों मेंसे वह कौन है जो मोमिनों का उनकी जानों से भी ज़्यादा मालिक है?'' उन्होंने कहा ''उसको अल्लाह जानता है और उसका रसूल'' हुज़ूर ने फ़रमाया ''अल्लाह मेरा मौला है और मैं मोमिनों का मौला हूँ, और मैं ही उनकी जानों से ज़्यादा उन पर मिलकियत का हक़ रखता हूँ।'' इसके बाद आपने फ़ौरन ही बिना किसी रुकावट के फ़रमाया ''पस जिसका मौला मैं हूँ, उसके मौला अली हैं'' आपने इस जुमले को तीन बार दुहराया और अहमद इब्ने हंबल की रिवायत में है कि चार बार दुहराया। अब आप यहाँ ठहर कर सारे वाक़ेआत को जो मदीने से चलने के वक़्त से शुरु हुए हैं और 'मन कुन्तु मौलाह फ़अलिय्यु मौलाह' को अदा करने तक पहुँचे हैं, दिल में दुहराइये, आयत की शान पर नज़र डालिये। अल्लाह के रसूल[स०] का ग़ौर फ़िक्र करना देखिये! लोगों को पास बुलवा रहे हैं, पीछे रहने वालों का इन्तिज़ार कर रहे हैं, माहौल को शरीक कर रहे हैं, पैग़ाम पहुँचाने के सभी पाये जाने वाले तरीक़े इस्तेमाल कर रहे हैं। क्या कोई कसर बाक़ी रह गयी? नहीं! हरगिज़ नही!

ग़दीरे ख़ुम में है इस शान से इस्लाम का बानी
अदाए फ़र्ज़ के जलवों से है पुर नूर पेशानी

विलायत के एलान के बाद हुज़ूर[स०] के दिल से ये दुआएँ निकलीं ''ऐ अल्लाह! दोस्त रख उसको जो इसको दोस्त रखे और दुश्मन रख उसको जो इसको दुश्मन रखे; मुहब्बत कर उस से जो इससे मुहब्बत रखे और दुश्मनी रख उससे जो इससे दुश्मनी रखे; और मदद कर उसकी जो इसकी मदद करे; और ज़लील कर उसको जो इसको ज़लील करे और हक़ को उस तरफ़ फेर दे जिधर ये फिरे।''

इस दुआ के बाद आप ने फ़रमायाः ''जो यहाँ हैं, उनका फ़र्ज़ है कि मेरे इस पैग़ाम को उन तक पहुँचाएं जो यहाँ नहीं हैं।''

हुज़ूर के दहने मुबारक से निकली हुई दुआएं क़ुबूल हुईं या नहीं, अगर क़ुबूल हुईं तो अल्लाह ने अली[अ०] को दोस्त रखा, उनके दुश्मन को दुश्मन समझा और ये बात कितनी अज़ीम हुई। और अगर ये दुआएँ क़ुबूल नहीं हुईं तो अल्लाह के रसूल[स०] की कितनी तौहीन हुई, और अल्लाह का वह रसूल जो अल्लाह का महबूब भी है। इसके बाद वह आयत नाज़िल हुई जिसका बयान शुरु में आ चुका है।

अब हुज़ूरे अकरम[स०] ने सभी लोगों से कहा कि जाकर अली[अ०] को विलायत की मुबारकबाद दो। इस काम के लिए आपने एक ख़ेमा लगवा दिया था जिसमें अली[अ०] जाकर बैठे और लोगों ने उनको आकर मुबारकबाद दी। लोग मुबारकबाद दे रहे थे कि ''ऐ अबूतालिब के बेटे! मुबारक हो कि आप हर मोमिन और हर मोमिना के मौला हो गये'' इस मौक़े पर हुज़ूर[स०] से इजाज़त लेकर हस्सान बिन साबित ने तहनियत का क़सीदा पढ़ा। यहाँ तक तो सारे काम अच्छी तरह अन्जाम पा गये, लेकिन बाद में क्या हुआ, इस पर इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की नीचे दी हुई हदीस रौशनी डालती है। आप[स०] ने फ़रमायाः ''लोगों को दो गवाहों से हक़ मिल जाया करता है, लेकिन अली[अ०] को एक लाख चौबीस हज़ार गवाहों के बाद भी ये हक़ न मिल सका।''

हदीसे ग़दीर को सहाब-ए-मुबारक में से एक सौ दस सहाबा ने नक़्ल किया। सहाबा और ताबईन के बाद हर दौर के अकाबिर उलमा ने इसे नक़्ल किया। पहली सदी तो सहाबा और ताबईन की थी, दूसरी सदी में छप्पन, तीसरी सदी में बान्नवे, चौथी सदी में तेंतालीस, पाँचवीं सदी में चौबीस, छठी सदी में इक्कीस, सातवीं सदी में इक्कीस, आठवीं सदी में दस, नवीं सदी में सोलह, दसवीं सदी में चौदह, ग्यारहवीं सदी में बारह, बारहवीं सदी में चौदह, तेरहवीं सदी में ग्यारह, चौदहवीं सदी में ग्यारह बड़े-बड़े उलमा ने इसकी तस्दीक़ की है।

इन सब की तादाद को अगर जोड़ा जाए तो सहाबा और ताबईन के बाद तीन सौ साठ तक पहुँच जाती है। हदीसे ग़दीर पर यूँ तो बहुत सी किताबें लिखी गयी, मगर अब्दुल हुसैन अहमद अल-अमीनी नजफ़ी की तालीफ़ ''अल-ग़दीर फ़िल किताबि वस्सुन्नह वल-अदब'' का जवाब नहीं। ये किताब दीनी, इल्मी, फ़न्नी, तारीख़ी, अदबी, अख़लाक़ी है। मेरे इल्म के मुताबिक़ इसकी ग्यारह जिल्दें छप चुकी हैं। मोअल्लिफ़ ने मेहनत, बारीक नज़र, तहक़ीक़ और तलाश और हक़ीक़त निगारी का हक़ अदा कर दिया है। ग़दीरे ख़ुम हमारी पहचान है। इसने हमको हक़ का कल्मा बलन्द करना सिखाया, हमारे दिलों से सलतनत और हशमत का ख़ौफ़ मिटाया। हम जितना इसे दुहराएंगे, उतनी ही मज़बूत मिज़ाजी हासिल कर पाएंगे।

जुलअशीरा की दावत से लेकर ग़दीर ख़ुम तक हुज़ूर[स°] ने अली[अ°] की बराबर पहचान करायी और खुले लफ़्ज़ों में सबको बताया कि ये मेरा जानशीन होगा, मेरा नायब होगा, मेरा वसी होगा, और अली[अ°] ने भी अपने किरदार से साबित कर दिया कि विलायत के मन्सब के यही हक़दार हैं। अपनी पैदाइश से लेकर हुज़ूर[स°] की वफ़ात तक हमेशा उनके साथ रहे और उनकी ख़िदमत की सआदत हासिल करते रहे। फ़ैज़ हासिल करना अगर कोई चीज़ है तो इसको क़ुबूल कीजिये कि अली[अ°] ने हुज़ूर से जितना फ़ैज़ कमाया, उतना कोई दूसरा न हासिल कर सका। रहना-सहना, उठना-बैठना, बातचीत-ख़ामोशी, इबादतें-मामलात, सबके बीच रहना-तन्हा रहना, बोलना-लिखना ग़रज़ ज़िन्दगी की हर मामूली से मामूली बात में जो कुछ अली[अ°] ने सीखा है वह सब हुज़ूर[स°] ही से सीखा है

रसूल[स°] वक़्त की तलवार को बदलते हैं
अली[अ°] मिला के क़दम साथ-साथ चलते हैं

इसको कहते हैं पैरवी, ऐसी होती है पैरवी।

पूछने वाला अगर पूछे कि ग़दीरे ख़ुम में मरकज़ी किरदार किसका था तो इसका जवाब आसान नहीं होगा। देखिये और ग़ौर कीजिये कि हूज़ूर[स°] को रिसालत की तबलीग़ की सनद लेनी है और अली[अ°] को इमामे अव्वलीन, वली, वसी-ए-रसूल[स°] होना है। एहतेमाम कर रहा है अल्लाह का रसूल[स°], जिसके लिए एहतेमाम हो रहा है, वह अली[अ°] की ज़ात है। इधर नुबुव्वत की ख़िदमत का सिलसिला है, उधर इब्तेदाए इमामत की बात है; इधर तबलीग़ को कमाल हासिल हुआ है, उधर दीन की हिफ़ाज़त की शुरुआत है। एक दरवाज़ा बन्द हो रहा है और एक दरवाज़ा खुल रहा है, जैसे मरकज़ी हैसियत एक ही हो।

हुज़ूर[स°] का ये पहला और आख़री हज था। अली[अ°] हालात का जायज़ा ले रहे थे। अब हुज़ूर की ज़िन्दगी का ज़माना ख़त्म होने वाला है और अली[अ°] रसूल[स°] के जानशीन होने वाले हैं।

ग़दीरे ख़ुम के बाद का माहौल बोझल होता जा रहा है। लोग अली[अ°] को जानते हैं। अली[अ°] समझते हैं कि ज़माना करवट ले चुका है, ख़यालात बदलते जा रहे हैं। रसूल[स°] के साथ अली[अ°] थे, अली[अ°] के साथ रसूल[स°], अली[अ°] जैसा बल्कि उनका दसवाँ हिस्सा भी कोई नहीं। अली[अ°] को अकेलेपन का एहसास बढ़ता जा रहा है। इक़्तेदार में वह लोग हैं जो अली[अ°] की बातों को मानते नहीं। दीन के महाज़ पर अली[अ°] हैं जिनके साथ लोग चल नहीं सकते। कितनी सख़्त और दुश्वार गुज़ार मन्ज़िल है! लेकिन अली[अ°] ने सभी दुश्वारियों पर क़ाबू हासिल किया। भागने का लफ़्ज़ उनकी डिक्शनरी में नहीं था वह डटे रहे और दीन की ख़िदमत करते रहे।

ग़दीरे ख़ुम ने ज़माने को यही पैग़ाम दिया कि हक़ का बोलबाला रहता है, उसे कभी हार का सामना करना नहीं पड़ता। हुज़ूर[स°] तबलीग़े रिसालत में पूरी तरह कामयाब रहे और आपने अपने काम को अधूरा नहीं छोड़ा। क़ुरआने हकीम को तैयार किया और अपना जानशीन तय किया, इसी लिए तो क़ुदरत की ज़बान पर आया कि आज के दिन दीन पूरा हुआ, नेमतें पूरी हुईं और इस्लाम दीन के तौर पर ख़ुदा की नज़रों में पसन्दीदा हुआ।



इदारा

मुख्य समाचार

इमामबाड़ा गुफ़रानमआब लखनऊ में अज़ीम मजालिस का तेईसवाँ दौर मुकम्मल

मौलाना सै० कल्बे आबिद मरहूम की याद में होने वाली दो दिवसीय अज़ीम मजालिस का सिलसिला पाकिस्तान के मशहूर आलिमे दीन मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी के ख़िताब के साथ ख़त्म हो गया। इमामबाड़ा गुफ़रानमआब में 3 अक्टूबर 2009[ई०] से 4 अक्टूबर 2009[ई०] तक जारी अज़ीम मजालिस में मुल्क व मुल्क के बाहर के नामी उलमा, ख़तीब और ज़ाकेरीन ने अपने ख़ास अन्दाज़ में क़ुरआन, हदीस और मासूमीन के क़ौल की रौशनी में इस्लामी तालीमात पर रौशनी डाली। कई नामी शायरों ने भी बारगाहे इमाम में अपने कलाम का नज़राना पेश किया। पाकिस्तान से आए मौलाना हसन जफ़र नक़वी ने अपने ख़िताब में कहा कि उलमा के ज़रिये आज इस्लाम के पैग़ाम को आम करने की हमेशा से ज़्यादा ज़रूरत है। ख़ास तौर पर दुखी इन्सानियत को आज इस्लाम के दामन की ज़रूरत है। मौलाना ने कहा कि रसूल[स०] के अहलेबैत[अ०] ने इन्सानियत को बचाने के लिए ही क़ुरबानियाँ दीं और कर्बला, तारीख़ का वह बाब है जहाँ हर मज़हब के मानने वालों का सर हुसैनियत के एहतेराम में झुक जाता है। उन्होंने कहा कि आज मुसलमानों के मसाएल इसी लिए हल नहीं हो रहे हैं कि वह इस्लाम के मिज़ाज में ढलने के बजाए इस्लाम को अपनी मर्ज़ी में ढालने में लगे हुए हैं। दहशतगर्दी की सख़्त मज़म्मत करते हुए मौलाना ने कहा कि इससे इस्लाम का कोई ताल्लुक़ नहीं है बल्कि दहशतगर्दी तो साम्राज ही की पैदा की हुई है। इससे पहले इलाहाबाद युनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर अबुल क़ासिम ने अपने अलग अन्दाज़ में मजलिस को ख़िताब करते हुए कहा कि इस्लाम ने ज़िन्दगी के जो उसूल बनाये हैं वह इन्सानी फ़ितरत के मुताबिक़ ही हैं इसलिए लोगों को चाहिए कि बेहतर ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए इन्सानी फ़ितरत को समझें। दिल्ली से आए मौलाना समीउल हसन वसीम ने अपनी तक़रीर में कहा कि हवासे ख़म्सा बाहरी निशानियों को अन्दर ले जाते हैं लेकिन सिर्फ़ ज़बान ही ऐसा ज़रिया है जो इन निशानियों और असरात को बाहर लाती है इसलिए हमें चाहिए कि ज़बान का इस्तेमाल सोच समझ कर करें। ईरान से आए हुए मौलाना रज़ा हैदर ने ख़ुलूस व इल्म की अहमियत पर रौशनी डालते हुए कहा कि हमारे हर अमल की बुनियाद सच्ची नियत पर है। इल्म भी फ़ायदेमन्द उसी वक़्त होगा जब ख़ुलूस के साथ हासिल किया जाएगा और इबादतों के क़ुबूल होने की बुनियाद भी ख़ुलूस ही पर है। दिल्ली से आए मौलाना मुमताज़ अली ने अपने मुदब्बिराना बयान में कहा कि रसूल[स०] के अहलेबैत[अ०] और रहनुमाओं ने हमारी ज़िन्दगी को बेहतर बनाने के लिए मिसाली किरदार पेश किये हैं और अगर उनके किरदार को सामने रखें तो ज़िन्दगी का मक़सद हासिल किया जा सकता है। जौनपुर से तशरीफ़ लाए आलिमे दीन मौलाना महमूदुल हसन ख़ाँ ने अपने ख़िताब में कहा कि कर्बला एक अलामत है जिसने बन्दगी को मेराज अता की और इमाम हुसैन[अ०] ने ऐसी क़ुर्बानियाँ पेश की हैं जिसने ज़िन्दगी को रौशनी अता की। इन आलिमों, ख़तीबों और ज़ाकिरों के अलावा जिन उलमा ने मजालिस को ख़िताब किया उनमें मौलाना महमूदुल हसन ख़ाँ सरपरस्त मजलिसे उलमा-ए-हिन्द, मौलाना शमीमुल हसन साहब सदर तन्ज़ीमुल मकातिब, मौलाना सफ़ी हैदर साहब सेक्रेट्री तनज़ीमुल मकातिब, मौलाना सफ़दर हुसैन जौनपूरी, मौलाना मुहम्मद हुज्जत, मौलाना वसी हसन ख़ाँ, मौलाना शमशाद अहमद, मौलाना तस्दीक़ हुसैन साहबान वग़ैरा के नाम शामिल हैं। मजालिस के बाद क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी ने मेहमानों का शुक्रिया अदा किया।

अमरीका और हिज़्बुल्लाह में टकराव के आसार

शिमाली लेबनान के हम्त इलाक़े में अमरीका की तरफ़ से एयरबेस बनाये जाने की ख़बरों पर लेबनान की ताक़तवर जंगजू तन्ज़ीम हिज़्बुल्लाह ने शदीद रद्दे अमल का इज़हार किया है। ख़याल रहे कि रोज़नामा अस-सफ़ीर ने हाल ही में शिमाली लेबनान के इलाक़े हम्त में अमरीका की तरफ़ से एक एयरबेस क़ायम करने की ख़बर प्रकाशित की थी।

हिज़्बुल्लाह के सियासी धड़े के एक रहनुमा ख़िज़्र नूरुद्दीन ने अख़बार नवीसों से बताया कि उनकी तन्ज़ीम व्हाइट हाउस के मन्सूबे को कभी भी पूरा नहीं होने देगी। उन्होंने कहा इस तरह के एयरबेस का बनाना मुल्क के अन्दुरूनी मामलों में खुली मदाख़लत है और मुल्क पर बिलवास्ता क़ब्ज़ा करने की तरह है। उन्होंने कहा कि लेबनान में अमरीकी फ़ौजियों की मौजूदगी की इजाज़त नहीं दी जानी चाहिए। ख़िज़्र नूरुद्दीन ने ये भी कहा कि लेबनान में जल्द ही एक कुल जमाअती हुकूमत क़ायम होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हम मुल्क के अन्दुरूनी मामलों में इस तरह की दख़ल अन्दाज़ी पर ख़ामोश बैठने वाले नहीं हैं और लेबनान की मिल्लत इस मन्सूबे को कभी क़ुबूल नहीं करेगी।

इस्राईली न्युकलयाइ असलहा

मध्य पच्छिमी एशिया के लिए संगीन ख़तरा

बैनुलअक़वामी न्युकलयाई तवानाई एजेन्सी (I.A.E.A.) के सरबराह मुहम्मद अल-बरादअी ने कहा है कि इस्राईल का न्युकलयाई हथियारों का ज़ख़ीरा मध्य पश्चिमी एशिया के लिए सबसे बड़ा ख़तरा है।

ज़नहवा के मुताबिक़ इतवार को ईरान के न्युकलयाई तवानाई आरगनाइज़ेशन के डायरेक्टर अली अक्बर सालेही से साथ मुशतरका प्रेस कान्फ्रेंस में अल-बरदाअी ने कहा कि इस्राईल ही अकेला मुल्क है जिसके पास न्युकलयाई हथियार है। उन्होंने सहाफ़ियों से कहा कि ईरान का न्युकलयाई मसला बातचीत और सफ़ारतकारी से हल हो सकता है लेकिन मैंने इस मामले को हल करने के लिए ऐसा इरादा कभी नहीं देखा। उन्होंने कहा कि आई. ए.ई.ए. के मुआनाकार २५ अक्टूबर को ईरान के नये यूरेनियम अफ़ज़ोदगी प्लान्ट का मुआयना करेंगे। उन्होंने कहा कि ये यक़ीनी बनाने के लिए कि प्लान्ट की तामीर पुरअमन मक़ासिद के लिए होती है, इसका वसी पैमाने पर मुआयना ज़रूरी है।

अल-बरादअी ने दुनिया की तश्वीश को दूर करने के लिए ईरान से न्युकलयाई अद्मे तौसीअ़ के मुआहदे के ज़ावाबित पर अमल करने को कहा। अल-बरादअी ने कहा कि ईरान के न्युकलयाई हथियार बनाने से मुताल्लिक़ प्रोग्राम का कोई सुबूत नहीं है और आई.ए.ई.ए. के कुछ ख़ास मुल्कों के ज़रिये लगाये गये इल्ज़ामों की बुनियाद पर कार्यवाही नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि मैं कई बार कह चुका हूँ और आज भी कहता हूँ कि एजेन्सी के पास ईरान के न्युकलयाई असलहा प्रोग्राम के बारे में कोई सुबूत नहीं है।

अल-बरादअी ने ईरानी हुक्काम से मुलाक़ात के बाद कहा कि ईरान के साथ ताल्लुक़ात महाज़आराई की फ़िज़ा से शफ़्फ़ाफ़ियत और बाहम तआवुन की तरफ बढ़ रहे हैं। उन्होंने इस दौरे को 'एक लम्हा' क़रार दिया और ईरान पर ज़ोर दिया कि वह जितना मुमकिन हो, उतना शफ़्फ़ाफ होने की कोशिश करे। मुहम्मद अल-बरादअी का कहना है कि ईरानी हुक्काम से मुलाक़ात 'कामयाब' रही और मुआयना कार ये यक़ीनी बनायेंगे कि क़ुम का जौहरी प्लान्ट सिर्फ़ पुरअमन मक़ासिद के लिए है। पिछले महीने ईरान ने यूरेनियम अफ़ज़ोदगी के दूसरे प्लान्ट की मौजूदगी का इन्केशाफ़ किया था जो क़ुम के क़दीमी शहर में एक पहाड़ के नज़दीक है।

अमरीकी राष्ट्रपति बाराक ओबामा ने अपील की थी कि ईरान दो हफ़्ते के अन्दर इस प्लान्ट तक 'बिला रोक टोक' इंस्पेक्टरों की रसाई मुमकिन बनाए और इसके बारे में वाज़ेह मालूमात फ़राहम करे। सनीचर को सरकारी टेलीवीज़न पर तक़रीर करते हुए ईरानी राष्ट्रपति अहमदी नेजाद ने कहा है कि 'हम ने कुछ भी छुपा नहीं रखा और राष्ट्रपति ओबामा ने इस बात को मुतनाज़े बनाकर एक बड़ी और तारीख़ी ग़लती की है'।

फ़िलस्तीनियों और इस्राईली पुलिस में झड़प

सेक्योरिटी असबाब के तहत मुसलमानों और यहूदियों के लिए मुक़द्दस एक मक़ाम को इसराईली पुलिस के ज़रिये बन्द किये जाने के बाद फिलस्तीनियों और इस्राईल पुलिस के दरमियान टकराव हुआ है। फिलस्तीनी मुज़ाहिरीन के ज़रिये पुलिस पर पत्थर और बोतलें फेंकी गईं। जबकि इसराईली पुलिस ने आँसू गैस के गोले दाग़े। इस सिलसिले में फ़िलस्तीन के पिछले वज़ीर हातिम अब्दुल क़ादिर समेत कई फिलस्तीनियों को हिरासत में लिया गया है। इस्राईली पुलिस का कहना है कि मज़कूरा कम्पाउण्ड को उन्होंने इसलिए बन्द किया क्योंकि फ़िलस्तीनी शहरी में इसमें इज्तेमाअ़ करने वाले थे जबकि फिलस्तीनियों का कहना है कि वह लोग हरमुश्शरीफ की यहूदी शिद्दत पसन्दों से हिफ़ाज़त करने की कोशिश कर रहे थे। वाज़ेह रहे कि यहूदी भी इसे 'टैम्पल माउण्ट' के नाम से अपना मुक़द्दस मक़ाम मानते हैं।

उधर फिलस्तीनी तहरीक जेहादे इस्लामी ने मस्जिदुल अक़सा पर सहयूनी हुकूमत की आए दिन की जारहियत पर अरब हुकूमतों की ख़ामोशी की मज़म्मत की है। तहरीक जेहादे इस्लामी के एक सीनियर रहनुमा अब्दुल्लाह शामी ने अल-आलम टी०वी० चैनल से गुफ़्तगू में कहा कि कुछ अरब हुकूमतों की ख़ामोशी से सहयूनी हुकूमत ने इन्तेहापसन्द सहयूनी अनासिर के साथ मिल कर मस्जिदुल अक़सा पर हमले तेज़ कर दिये हैं। उन्होंने कहा कि मस्जिदुल अक़सा का ताल्लुक़ सिर्फ़ फ़िलस्तीनियों से नहीं बल्कि सारी दुनिया से है और सारी दुनिया में उसे मुक़द्दस समझा जाता है इसलिए सबको क़िब्ल-ए-अव्वल की हिफ़ाज़त के दिफ़ाअ़ की ज़िम्मेदारी पूरी करनी चाहिए। उधर मस्जिदुल अक़्सा के ख़तीब शैख़ अकरमा सबरी ने सहयूनी फ़ौजियों के हाथों मस्जिदुल अक़्सा की तौहीन की मज़म्मत करते हुए कहा कि सहयूनियों ने ये इक़दाम फ़िलस्तीनियों के जज़्बात भड़काने के लिए किया है। याद रहे कि यहूदियों की ईद के बहाने सैकड़ों इन्तेहापसन्द सहयूनियों ने सहयूनी फ़ौज की हिमायत से हालिया दिनों में मस्जिदुल अक़सा में दाख़िल होकर उसकी तौहीन की है।